पाठ–2 कक्षा–10

पद

मीराबाई

(1503–1560)

मीराबाई

• **मीराबाई** कृष्ण-भक्ति शाखा की प्रमुख कवयित्री हैं। उनका जन्म १५०४ ईस्वी में जोधपुर के पास मेड़ता ग्राम मे हुआ था। कुड़की में मीरा बाई का ननिहाल था। उनके पिता का नाम रत्नसिंह थी। उनके पति कंवर भोजराज उदयपुर के महाराणा सांगा के पुत्र थे। विवाह के कुछ समय बाद ही उनके पति का देहान्त हो गया। पति की मृत्यु के बाद उन्हे पति के साथ सती करने का प्रयास किया गया किन्तु मीरां इसके लिए तैयार नही हुई | वे संसार की ओर से विरक्त हो गयीं और साधु-संतों की संगति में हरिकीर्तन करते हुए अपना समय व्यतीत करने लगीं। कुछ समय बाद उन्होंने घर का त्याग कर दिया और तीर्थाटन को निकल गईं। वे बहुत दिनों तक वृन्दावन में रहीं और फिर द्वारिका चली गईं। जहाँ संवत १५६० ईस्वी में वो भगवान कृष्ण कि मूर्ति मे समा गई । मीरा बाई ने कृष्ण-भक्ति के स्फुट पदों की रचना की हैं।

मीरा के पद

हरि आप हरो जन री भीर ।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर ।
भगत कारण रूप नरहरि, धर् यो आप सरीर ।
बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर ।
दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर ।।

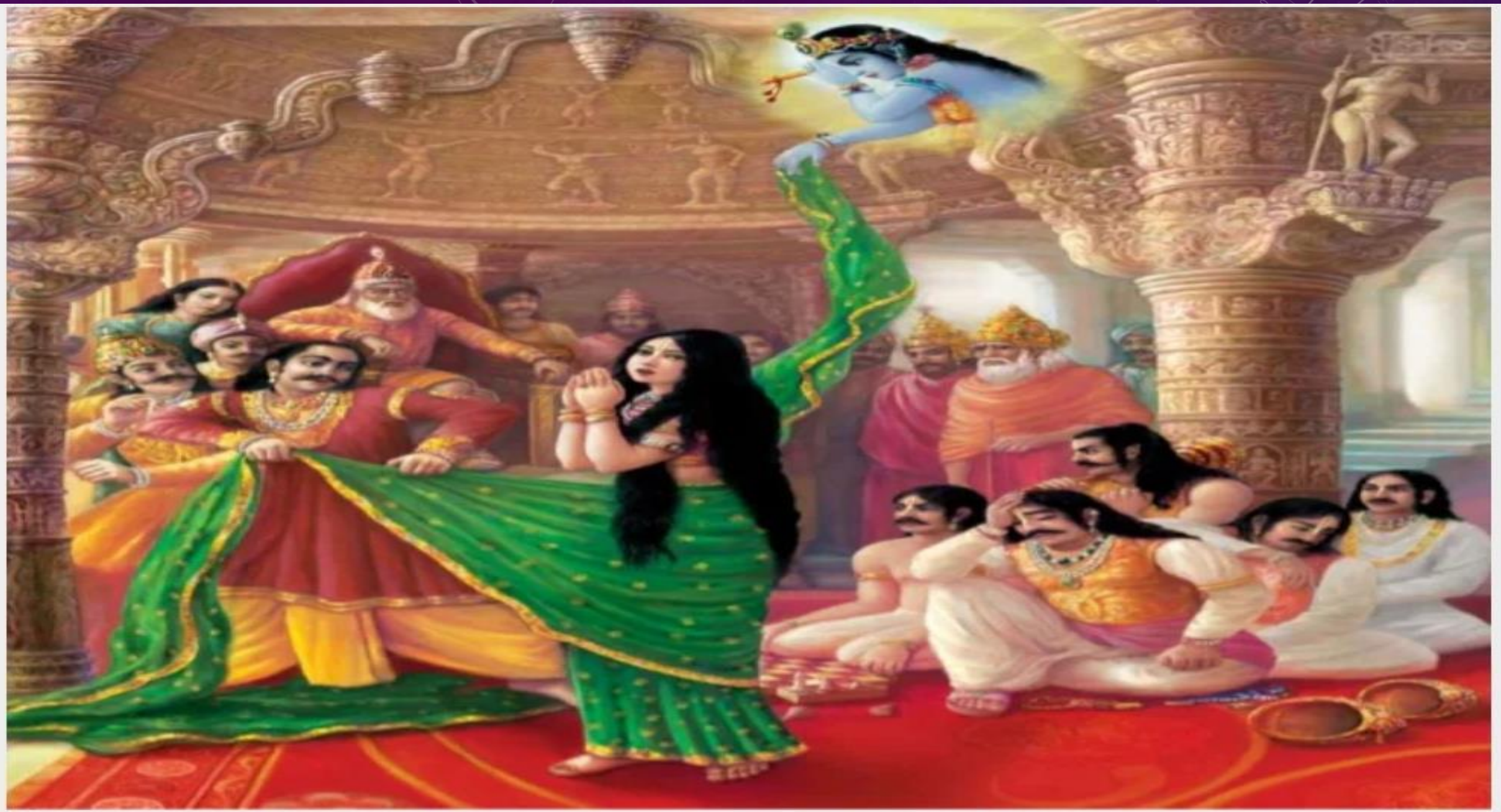

Narasimha Avatar

2 मीरा के पद

स्याम म्हाने चाकर राखो जी,
गिरधारी लाल म्हाँने चाकर राखोजी।
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ।
बिन्दरावन री कुंज गली में, गोविन्द लीला गास्यूँ।
चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी।
मोर मुगट पीताम्बर सौहे, गल वैजन्ती माला।
बिन्दरावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला।
ऊँचा ऊँचा महल बणावं बिच बिच राखूँ बारी।
साँवरिया रा दरसण पास्यूँ पहर कुसुम्बी साड़ी।
आधी रात प्रभू दरसण, दीज्यो जमनाजी रे तीरां।
मीराँ रा प्रभू गिरधर नागर, हिवड़ो घणो अधीराँ।।

भावार्थ –

मीरा भगवान के यहाँ नौकर या
दासी बनना चाहती हैं।
इसमें मीरा को क्या क्या लाभ होने वाले हैं,
इसका मीरा ने बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया है।

जब मीरा बाग़ लगाएंगी तो उसी बहाने
रोज उन्हें श्याम के दर्शन होंगे। फिर वे भक्ति भाव से
अभिभूत होकर ब्रिन्दावन की संकरी गलियों
में गोविन्द की लीला गाती फिरेंगी।

चाकरी में मीरा को तीन मुख्य फायदे होंगे।
उन्हे दर्शन और खर्चे के लिए मिलेंगे
और भाव और भक्ति की जागीर मिलेगी।

कृष्ण के उस रूप का वर्णन मीरा ने किया है,
जो जग जाहिर है। कृष्ण के पीले वस्त्र, मोर का
मुकुट और गले में वैजयंती की
माला बहुत सुन्दर लगती है।

वृन्दावन में उनका जो ऊँचा महल बना हुआ है , मीरा उस महल के आँगन के बीच–बीच में फुलवारी बनाना चाहती हैं।

वे कुसुम्बी [केसरिया रंग की] साड़ी पहनकर अपने साँवले [कृष्ण] के दर्शन पाना चाहती हैं।
मीरा कृष्ण से विनती करती हैं कि हे प्रभु! आप आधी रात के समय मुझे यमुना नदी के किनारे दर्शन देने आएँ क्योंकि हे गिरिधर नागर! आप तो मेरे प्रभु हैं, मेरा मन आप से मिलने के लिए बहुत अधीर [बेचैन/व्याकुल]है ।